एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

तृतीय सेमेस्टर

इस सेमेस्टर में 75–75 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 25–25 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं।

तृतीय सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – प्रथम : Paper Code ---------

प्रश्न पत्र–प्रथम	पाण्डुलिपि सम्पादन	75 अंक
इकाई एक	पाण्डुलिपि सम्पादन के निम्नांकित प्रमुख सिद्धान्त– 1. पाण्डुलिपि विज्ञान का स्वरूप एवं महत्त्व 2. पाण्डुलिपि की रचना–प्रक्रिया एवं चिन्ह	15 अंक
इकाई दो	1. पाण्डुलिपि प्राप्ति विवरण, बाह्य एवं अंतरंग परिचय 2. लिपि के प्रकार (ब्राह्मी, देवनागरी आदि)	15 अंक
इकाई तीन	पाण्डुलिपि सम्पादन के निम्नांकित प्रमुख सिद्धान्त 1. वर्ण–विकार एवं शब्द अर्थ की समस्या 2. पाठालोचन की प्रमुख प्रणालियां एवं पाठ–निर्माण	15 अंक
इकाई चार	1. काल–निर्धारण के प्रमुख आधार 2. प्रमुख ग्रन्थ – भण्डारों का परिचय एवं महत्त्व	15 अंक
इकाई पांच	सेतुबन्ध (प्रवरसेन) प्रथम सर्ग (1–40 गाथाएं, व्याख्या) सम्पा.डॉ.राजा राम जैन	15 अंक

सहायक पुस्तकें:–

1. पाण्डुलिपि सम्पादन कला – डॉ.राम गोपाल शर्मा दिनेश
2. पाण्डुलिपि विज्ञान – डॉ.सत्येन्द्र राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
3. पाठालोचन की भूमिका – डॉ.कत्रो
4. सामान्य पाण्डुलिपि विज्ञान – डॉ.महावीर प्रसाद जैन
5. भारतीय पुरालिपि विद्या – कृष्णदत्त वाजपेयी
6. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ.नेमिचन्द शास्त्री (पृ.247–296)
7. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 5, पं.अम्बालाल शाह
8. सेतुबन्ध – अनु. डॉ.राजा राम जैन
9. सेतुबन्धमहाकाव्य का आलोचनात्मक परिशीलन – प्रो.रामजी राय
10. सेतुबन्ध (प्रथम सर्ग) – डॉ.हरिशंकर पाण्डेय